

# डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो, यीशु से पहले यहूदी धर्म, सत्र 2, यहूदी इतिहास के पुनर्निर्माण के स्रोत

© 2024 टोनी टोमासिनो और टेड हिल्डेब्रांट

यह टोनी टॉमसिनो और यीशु से पहले यहूदी धर्म पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2 है, यहूदी इतिहास के पुनर्निर्माण के स्रोत।

तो, इस अवधि के बारे में एक सवाल यह है कि मैंने पहले ही इस तथ्य का उल्लेख किया है कि हमारे पास इस समय से बहुत सारे डेटा हैं।

और जो कोई भी वास्तव में इसका अध्ययन करना शुरू करता है, वह पाता है कि यह वाक्यांश, 400 मौन वर्ष, वास्तव में कितना विडंबनापूर्ण है क्योंकि ये लोग बहुत बातूनी थे। वे इस दौरान बिलकुल भी चुप नहीं थे। इसलिए, हम यहाँ कुछ अलग-अलग स्रोतों के बारे में बात करने जा रहे हैं जिनका हम उपयोग करते हैं और उन स्रोतों की गुणवत्ता, विशेषताएँ, और वे हमें घटनाओं, संस्कृति और उन विकासों के बारे में कैसे जानकारी देते हैं जो अंतर-नियम अवधि के दौरान हो रहे थे।

तो, सबसे पहला सवाल यह है कि हम इसे 400 मौन वर्ष क्यों कहते हैं? इसे मौन क्यों कहा जाता है? खैर, यह एक प्रोटेस्टेंट वाक्यांश है। यह वास्तव में कैथोलिक या रूढ़िवादी लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली चीज़ नहीं है क्योंकि उनके पास वास्तव में इस अवधि के ग्रंथ हैं जिन्हें वे अपनी बाइबल का हिस्सा मानते हैं। प्रोटेस्टेंट और यहूदियों के पास ऐसा नहीं है।

एक सवाल जो उठा है, और वास्तव में जो अभी भी प्रोटेस्टेंट और यहूदियों दोनों के बीच बहस का विषय है, वह यह है कि क्या भविष्यवाणी बंद हो गई है या नहीं। और आप देखिए, इसका एक कारण यह है कि आमोस की पुस्तक इस समय के बारे में बात करती है जब दिन आ रहे हैं, प्रभु यहोवा की वाणी है, जब मैं देश में अकाल भेजूंगा, रोटी या पानी की प्यास का अकाल नहीं, बल्कि यहोवा के वचनों को सुनने का अकाल। बहुत से लोगों, बहुत से प्रोटेस्टेंट और यहूदियों ने भी तर्क दिया है कि यह भविष्यवक्ता मलाकी के निधन के साथ भविष्यवाणी अवधि के अंत को संदर्भित करता है।

और इसलिए, इस समय, प्रोटेस्टेंट, अधिकांश प्रोटेस्टेंट और यहूदियों के अनुसार, ऐसा समय है जब ईश्वर अब उस तरह से बात नहीं कर रहा है जैसा वह पहले करता था। इसलिए, प्रोटेस्टेंट ने अंततः बाइबल से कई पुस्तकों को हटाने का फैसला किया जो पहले की परंपरा का हिस्सा थीं और जो वास्तव में इस अवधि का हिस्सा थीं। और हम इन पुस्तकों को अपोक्रीफा कहने लगे हैं, जिसके पीछे कई कारण हैं जिन्हें हम थोड़ी देर में देखेंगे।

लेकिन ये कैथोलिक बाइबिल का हिस्सा बने हुए हैं। विभिन्न रूढ़िवादी परंपराओं में इनके विभिन्न रूप हैं। एंग्लिकनों के बीच भी, आम तौर पर इन्हें उनके धर्मग्रंथों का हिस्सा माना जाता है, हालांकि ये आधिकारिक धर्मग्रंथ नहीं हैं, और इन्हें पढ़ने के लिए अच्छा माना जाता है।

और कभी-कभी तो पूजा में भी इनका इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन ज़्यादातर प्रोटेस्टेंटों के लिए अपोक्रीफा एक बड़ा रहस्य है। इसलिए, हम यहाँ उस रहस्य को भी थोड़ा-बहुत उजागर करने जा रहे हैं।

तो, यहूदी इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए हमें कौन से स्रोत मिले? हम साहित्यिक स्रोतों से एक कदम पीछे हटकर भौतिक स्रोतों, मुख्य रूप से पुरातत्व के बारे में थोड़ी बात करने जा रहे हैं। अब, मैं पुरातत्वविद् नहीं हूँ, इसलिए मैं यहाँ जो कह रहा हूँ, वह शायद किसी को भी नाराज़ कर सकता है। लेकिन पुरातत्व एक उल्लेखनीय विज्ञान है जो पिछले कुछ सौ वर्षों में अपने आप में उभर कर आया है।

यह पुराने दिनों की तुलना में कहीं ज़्यादा वैज्ञानिक हो गया है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह एक सटीक विज्ञान है। इसमें अभी भी कुछ खामियाँ हैं।

और बाइबिल के विद्वानों के बीच यह बड़ी बहस, जीवंत बहस है। बाइबिल के विद्वानों का एक पूरा समूह है जो मानता है कि पुराने नियम या प्राचीन इज़राइल के इतिहास को वास्तव में स्थापित करने का एकमात्र तरीका पुरातत्व का उपयोग करना है। कुछ लोग कहेंगे कि हमें बस बाइबिल को एक तरफ़ धकेलना होगा क्योंकि बाइबिल पक्षपाती है और बाइबिल एक साहित्यिक स्रोत है, और इसके बजाय, हम इज़राइल के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए पूरी तरह से पुरातत्व पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं।

फिर बहस का दूसरा पक्ष यह कहता है कि, नहीं, वास्तव में, पुरातत्व एक सटीक विज्ञान है। हमें वास्तव में साहित्यिक स्रोतों पर अधिक निर्भर रहना होगा। अब, मैं दूसरे पक्ष की तुलना में उस पक्ष की ओर अधिक हूँ, लेकिन पुरातत्व के अभी भी अपने उपयोग हैं।

पुरातत्व के साथ कुछ समस्याएँ, निश्चित रूप से, इस तथ्य से जुड़ी हैं कि यह व्याख्या पर निर्भर है, जैसा कि कोई भी डेटा होता है। लेकिन इज़राइल के पुरातत्व के साथ हमारे पास कुछ मुद्दे हैं, और विशेष रूप से इंटरटेस्टामेंटल अवधि के, कुछ ऐसे स्थल हैं जिनकी हम वास्तव में खुदाई करने में सक्षम होना चाहते हैं। हम ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि वे आबाद हैं, और आप ज़्यादातर मामलों में किसी के घर के नीचे खुदाई नहीं कर सकते। इसलिए, यरुशलम, हमने यरुशलम के आसपास कुछ खुदाई की है, और वे शहर के नीचे खुदाई कर रहे हैं और इसी तरह।

हम वाकई पूरी जगह को खोदकर उसे पुरातात्विक स्थल में बदलना चाहेंगे, लेकिन ऐसा नहीं होने वाला है। बहुत सी जानकारी जो हम चाहते हैं कि हमारे पास हो, बहुत से डेटा जो हम चाहते हैं कि हमारे पास हो, बहुत सी कलाकृतियाँ, वे सभी दफ़न हैं, और वे किसी के घर के नीचे दबी हैं, और हम उन तक नहीं पहुँच सकते। यह भी तथ्य है कि हम जो कुछ भी खोदते हैं वह खंडित होता है, आम तौर पर, वास्तव में, सचमुच खंडित होता है, जैसे मिट्टी के बर्तनों के टूटे हुए टुकड़े

जिन्हें फिर से बड़ी मेहनत से जोड़ना पड़ता है, टूटे हुए शिलालेख, इमारत की दीवारें, और निश्चित रूप से ग्रंथ, वे ग्रंथ जिनके बारे में हम थोड़ी देर में बात करेंगे जो विभिन्न पुरातात्विक खुदाई में पाए जाते हैं जो खंडित और सड़ चुके हैं और उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों से फिर से जोड़ना पड़ता है।

इसलिए, साक्ष्य की खंडित प्रकृति इसे कठिन बनाती है, और क्योंकि यह खंडित है, व्याख्याकारों को बहुत सारे छेद भरने पड़ते हैं। और यहीं पर पूरी व्यक्तिपरकता की बात आती है। इस तथ्य के कारण कि हमें इन छेदों को भरना है, हमें अपनी कल्पना का उपयोग करना होगा।

हमें पहेलियों को तब जोड़ना शुरू करना होगा जब बहुत सारे टुकड़े गायब हों। और इसके लिए हमें न केवल पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी चाहिए बल्कि बहुत सारी रचनात्मक सोच की भी आवश्यकता है। और इसलिए, पुरातत्व हमें कुछ चीजें बता सकता है जैसे कि प्रमुख युद्ध कहाँ लड़े गए थे।

यह हमें ऐसी चीजें बता सकता है जैसे कि बस्तियाँ कहाँ थीं, लेकिन यह बस्तियों की तिथि निर्धारित करने का सबसे अच्छा तरीका नहीं है। स्ट्रेटीग्राफी नामक एक पूरा क्षेत्र है जो हमें विभिन्न परतों की तिथि निर्धारित करने में मदद करता है। और यह सब विवादास्पद है क्योंकि अलग-अलग लोगों की अलग-अलग परतों की अलग-अलग व्याख्याएँ हैं और इसी तरह, वगैरह, वगैरह, वगैरह।

तो वास्तव में, मुझे लगता है कि पुरातत्व का सबसे अच्छा उपयोग साहित्यिक ग्रंथों के संबंध में इसका उपयोग करना और दोनों का एक साथ उपयोग करके प्राचीन दुनिया की तस्वीर बनाना है। यरुशलम, बेशक, बहुत अधिक खुदाई का स्थल रहा है, जितना हम यरुशलम में खुदाई कर सकते हैं। लेकिन जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, यरुशलम प्राचीन काल से बसा हुआ है और आज भी बसा हुआ है।

यरूशलेम में कई पवित्र स्थल हैं, और आप उनके नीचे या आस-पास खुदाई नहीं कर सकते। वैसे, आजकल वे उनके नीचे खुदाई करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन यह मुश्किल है। और इसलिए लोग चाहते हैं कि आप उन चीजों को अकेला छोड़ दें।

तो, यरुशलम एक ऐसी जगह है जहाँ हम यरुशलम के बारे में और अधिक पुरातात्विक जानकारी प्राप्त करना चाहेंगे, लेकिन हम इसे प्राप्त नहीं कर सकते। कुमरान, बेशक, आजकल मृत सागर स्क्रॉल की खोज के कारण एक बहुत प्रसिद्ध स्थल है, जिसके बारे में हम बाद में कुछ विस्तार से बात करने जा रहे हैं। लेकिन यह स्थल अपने आप में एक बस्ती थी और मृत सागर स्क्रॉल की खोज तक एक छोटी बस्ती थी, या मामूली पुरातात्विक रुचि का स्थान था।

फिर, ग्रंथों और साइट के बीच संबंध स्थापित किए गए। और इसलिए, कुमरान हमारे लिए एक पुरातात्विक स्थल के रूप में बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। मसादा एक ऐसा स्थल रहा है जिसने कई खुदाई करने वालों, कई बाइबिल विद्वानों और कई आम लोगों का ध्यान और कल्पना को आकर्षित किया है, क्योंकि इस स्थल पर यहूदियों की सामूहिक आत्महत्या से जुड़ी रोमांटिक कहानी है।

लेकिन रोम के खिलाफ रोमन विद्रोह के दौरान स्वतंत्रता सेनानियों की सामूहिक आत्महत्या से पहले मसादा काफी समय से अस्तित्व में था। वहाँ कई कब्जे के स्तर हैं, और मसादा से कुछ उल्लेखनीय खोजें सामने आई हैं। मुझे लगता है कि सबसे मार्मिक खोज यह थी कि कुछ साल पहले, यहजेकेल की पुस्तक का एक टुकड़ा जानबूझकर मसादा में दफन किया गया था।

और वह अंश सूखी हड्डियों के पुनरुत्थान के बारे में ईजेकील के दर्शन से था। और इसलिए यह लगभग ऐसा था मानो वहाँ के लोग खुद को इस विचार से प्रोत्साहित कर रहे थे कि, नहीं, वे फिर से उठेंगे। इतना ही नहीं, बल्कि उनका राष्ट्र फिर से उठेगा।

इसलिए, मसादा एक दिलचस्प और उल्लेखनीय स्थल रहा है और यहाँ से वास्तव में कुछ ऐसे ग्रंथ मिले हैं जो हममें से उन लोगों के लिए बहुत रुचिकर रहे हैं जो द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म का अध्ययन करते हैं। हमारे लिए पुरातत्व से ज़्यादा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक लेखक हैं। इस युग के इतिहास को फिर से बनाने के लिए हम कई अलग-अलग स्रोतों का उपयोग करते हैं।

कभी-कभी, वे एक-दूसरे के साथ संघर्ष करते हैं। कभी-कभी, वे कल्पना की उड़ान भरते हैं। लेकिन विवेकपूर्ण तरीके से इस्तेमाल किए जाने पर, हम पाते हैं कि इन ऐतिहासिक लेखकों के पास इस युग में क्या हो रहा था, यह समझने के लिए हमारे लिए बहुत अधिक मूल्य है।

यह निश्चित रूप से पुरातात्विक डेटा से अधिक स्पष्ट है; जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, पुरातत्व हमें बता सकता है कि लोग कहाँ थे और वे लगभग कब थे। यह हमें आम लोगों के दैनिक जीवन के बारे में बहुत सी बातें बता सकता है, जिनमें शायद ऐतिहासिक लेखकों की रुचि नहीं थी। लेकिन ऐतिहासिक स्रोत वास्तव में हमें उन लोगों के नाम जैसी चीजें बता सकते हैं जो पुरातात्विक डेटा नहीं बता सकते हैं।

इनमें से कुछ ऐतिहासिक स्रोत प्रत्यक्षदर्शियों के काम हैं। हम यहाँ कुछ ही मिनटों में कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण प्रत्यक्षदर्शियों के बारे में बात करने जा रहे हैं। उनमें से कुछ तो उन घटनाओं में भागीदार भी थे जिन्हें उन्होंने दर्ज किया था।

यह जरूरी नहीं कि वे वस्तुनिष्ठ स्रोत हों, लेकिन कम से कम वे उन घटनाओं के बारे में कुछ अधिकार के साथ बोल सकते हैं, जिनके बारे में वे बोलते हैं। अब, ऐतिहासिक विवरण चुनिंदा होते हैं। एक चीज जिसके बारे में हम जानना चाहेंगे, वह है आम आदमी का जीवन, आप जानते हैं।

हम वास्तव में आम लोगों के जीवन के बारे में ज़्यादा नहीं जानते हैं क्योंकि हमारा ज़्यादातर ऐतिहासिक डेटा महान लोगों के बारे में है, ऐसे लोग जिनके नाम के अंत में महान शब्द जुड़ा हुआ है। ये वे लोग हैं जिनके बारे में लिखना वाकई पसंद किया जाता है। हमारे ज़्यादातर स्रोत बड़ी घटनाओं पर केंद्रित हैं, न कि रोज़मर्रा की घटनाओं पर।

और इसलिए, हम महसूस करते हैं कि इन ऐतिहासिक स्रोतों से हमें जो चित्र मिलता है, उसमें भी छेद और अंतराल हैं। और फिर, कभी-कभी, हमें उन अंतरालों को भरने के लिए अपनी कल्पना का उपयोग करना पड़ता है। लेकिन फिर भी, निश्चित रूप से बहुत अधिक मूल्यवान है, और मैं

यह जानते हुए भी कह रहा हूँ कि मैं कुछ लोगों का अपमान कर रहा हूँ, कालक्रम के पुनर्निर्माण के लिए हमारे, कहे, पुरातात्विक खोजों की तुलना में कहीं अधिक मूल्यवान है।

एक बात जो हमें ध्यान में रखनी चाहिए, वह यह है कि हमारे स्रोत पक्षपाती हैं। और एक बात जो हम पाएँगे कि जब हम यूनानियों और फारसियों के बीच संघर्ष के बारे में बात करेंगे, तो वे सभी यूनानियों द्वारा लिखे गए हैं। और यूनानियों को फारसी पसंद नहीं थे।

वास्तव में, आप कह सकते हैं कि यूनानियों को फारसियों से नफ़रत थी, हालाँकि वे कुछ हद तक सम्मान देते थे, खास तौर पर साइरस महान को। लेकिन ज्यादातर मामलों में, उनके विवरण इस बहुत ही मजबूत पूर्वाग्रह को दर्शाते हैं। और इसलिए, हम हमेशा उन्हें संदेह की नज़र से देखते हैं।

उनमें से कुछ को हम नमक के डिब्बे में डालकर देखते हैं क्योंकि उनके अपने दृष्टिकोण होते हैं, जो हमेशा उन विषयों और विषयों के अनुकूल नहीं होते जिन पर वे लिखते हैं। तो ग्रीक और रोमन लेखक। इस युग के लिए, हमारे सबसे महत्वपूर्ण ग्रीक लेखकों में से एक हेरोडोटस है।

हेरोडोटस ने फ़ारसी युद्धों का इतिहास लिखा। वह उस समय के आस-पास रहता था जब फ़ारसी युद्ध लड़े गए थे, इसलिए वह कुछ हद तक अधिकार के साथ लिख सकता था। लेकिन सभी यूनानी लेखकों की तरह, हेरोडोटस भी फ़ारसी लोगों के खिलाफ़ बहुत पक्षपाती था।

हेरोडोटस के पास लिखने का भी एक अद्भुत तरीका था, जिससे उसे पढ़ने में बहुत मज़ा आता था। उसे अपनी यात्राओं में सुनी गई कहानियाँ सुनाना बहुत पसंद था। और इसलिए वह हमें एक अद्भुत कहानी सुनाता है, उदाहरण के लिए, एक पूरे गाँव के लोगों की जो हर पूर्णिमा को भेड़ियों में बदल जाते थे। वह कहता है, यह कहने का मतलब यह नहीं है कि मुझे कहानी पर विश्वास है, लेकिन ऐसा ही कहा जाता है, आप जानते हैं।

लेकिन हेरोडोटस इसी तरह की बातें करते थे। और इसलिए, जब हम फारसियों के बारे में उनके विवरण पढ़ते हैं, तो हमें एहसास होता है कि उनके कुछ विवरण हमेशा फारसी जीवन और फारसी रीति-रिवाजों का सबसे सटीक चित्रण नहीं हो सकते हैं। लेकिन फिर भी, यह एक बेहतरीन किताब है, और चूँकि वह उन घटनाओं के बहुत करीब रहते थे जिनके बारे में उन्होंने लिखा था, इसलिए वह शायद उस अवधि के लिए हमारे सबसे विश्वसनीय स्रोतों में से एक है।

थूसीडाइड्स एक दिलचस्प व्यक्ति है। थूसीडाइड्स को कभी-कभी इतिहास का पिता कहा जाता है, क्योंकि कभी-कभी हेरोडोटस को भी, लेकिन ज्यादातर थूसीडाइड्स को, क्योंकि थूसीडाइड्स अपने लेखन की शुरुआत कुछ ऐसे शब्दों से करते हैं जो शायद आपमें से उन लोगों को बहुत परिचित लगे जो न्यू टेस्टामेंट पढ़ते हैं। वह कहते हैं कि मैंने लिखने का बीड़ा उठाया है, भले ही दूसरे लोगों ने इन चीज़ों के बारे में लिखा हो, मैंने उन लोगों का साक्षात्कार करके और घटनाओं का सबसे प्रामाणिक संस्करण पेश करके एक सटीक विवरण लिखने का बीड़ा उठाया है जो इसमें शामिल थे।

खैर, बेशक, यह ल्यूक के अनुसार सुसमाचार की तरह ही लगता है, आप जानते हैं। व्यक्तिगत रूप से, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि ल्यूक, किसी अर्थ में, थ्यूसीडाइड्स के लेखन के बाद अपने लेखन को तैयार कर रहा था क्योंकि थ्यूसीडाइड्स इतिहास लेखकों में एक दिग्गज थे। उनका काम भी इस युग के कुछ हिस्सों में फैला हुआ है।

उन्होंने मुख्य रूप से ग्रीक शहर-राज्यों के बीच संघर्ष के बारे में लिखा, लेकिन फारस और कुछ यहूदी घटनाओं का भी उनके लेखन में उल्लेख है। प्लूटार्क उस काल से काफी बाद का है जिसके बारे में हम यहाँ लिख रहे हैं। लेकिन उसने कई स्रोतों का इस्तेमाल किया और उसे एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्रोत भी माना जाता है।

सिसरो, प्रसिद्ध रोमन वक्ता। सिसरो एक दिलचस्प व्यक्ति है। कई कारणों से, उनकी कई रचनाएँ बची हुई हैं।

सिसरो यहूदियों से नफरत करता था। और यह बात उसके लेखन में भी झलकती है। लेकिन क्योंकि वह उनसे नफरत करता था, इसलिए उसने उनके बारे में काफी कुछ लिखा।

इसलिए, हम इस अवधि के कुछ हिस्सों को फिर से बनाने में मदद के लिए सिसरो के कुछ लेखों का उपयोग कर सकते हैं। सुएटोनियस, एक और बहुत ही महत्वपूर्ण इतिहासकार। और हेस्टेसियस एक और है।

बस कुछ इतिहासकारों का काम हमारे पास दूसरे लोगों के कामों में समाहित अंशों के रूप में आया है, जैसे चर्च के पिता यूसेबियस। अपने कई इतिहासों में, उन्होंने इनमें से कुछ लोगों के उद्धरण दिए हैं, अन्य चर्च के पिताओं ने भी, कई हेलेनिस्टिक दार्शनिकों के अंशों को संरक्षित किया है। और इसलिए, वे इस अवधि के लिए हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

तो लीजिए। हमारे लिए अब तक का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति फ्लेवियस जोसेफस है। वह 37 से 100 ई. तक जीवित रहा।

हम मानते हैं कि यह मूर्ति फ्लेवियस जोसेफस की है। और उसकी शानदार नाक को देखिए। लेकिन जोसेफस रोम के खिलाफ महान विद्रोह में एक यहूदी जनरल था।

उन्होंने रोमन उपभोग के लिए यहूदी इतिहास के कई खंड भी लिखे। क्या आप समझे? रोमन उपभोग के लिए डिज़ाइन किया गया। क्योंकि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु है।

अब मैं इस बारे में विस्तार से बताने जा रहा हूँ, और हम इस व्यक्ति के बारे में काफी देर तक बात करने जा रहे हैं क्योंकि हमारी बहुत सी जानकारी जोसेफस पर निर्भर है। जोसेफस अपने बचपन के बारे में एक दिलचस्प कहानी बताता है। वह हमें बताता है कि उसका जन्म 37 ई. में हुआ था।

वह मथायस का बेटा था, जो एक पुजारी था। और उसकी माँ भी एक बहुत अच्छे यहूदी परिवार से थी। और उसने बचपन में ही अपनी शिक्षा से कानून के शिक्षकों को चकित कर दिया था।

और आप जानते हैं, वह अन्य बच्चों से इतना बेहतर था कि इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह महान चीजों के लिए किस्मत में था। अब, आप जानते हैं, हम इस तरह की चीजें पढ़ते हैं, और हम इससे दूर हो जाते हैं। लेकिन हे, उन दिनों लेखकों के लिए विनम्रता वास्तव में कोई गुण नहीं माना जाता था।

नहीं, ये लोग अपनी ही तारीफ़ करने को तैयार थे, और उनसे यही उम्मीद की जाती थी। और जोसेफ़स इस मामले में निराश नहीं करते। इसलिए, वे हमें बताते हैं कि बचपन में उन्होंने कानून के शिक्षकों को चकित कर दिया था।

उनका पालन-पोषण धार्मिक रीति से हुआ था। आप जानते हैं, हम उनके धार्मिक पालन-पोषण के बारे में ज़्यादा नहीं जानते। सबसे ज़्यादा संभावना है कि उनका पालन-पोषण एक सद्दुकी के रूप में हुआ था।

और हम बाद में इस बारे में थोड़ा और बात करेंगे कि इसका क्या मतलब है। लेकिन अभी के लिए, यह उस समय के प्रमुख यहूदी संप्रदायों में से एक था। और हम निश्चित रूप से नए नियम में उनके बारे में सुनते हैं।

16 साल की उम्र में, वह धार्मिक खोज पर निकल पड़े। उन्होंने विभिन्न शिक्षकों से पूछताछ शुरू की और विभिन्न यहूदी धार्मिक शिक्षाओं और संप्रदायों और लोगों के बारे में जानना शुरू किया। और जोसेफ़स के अनुसार, उन्होंने रेगिस्तान में एक साधु के साथ तीन साल बिताए, जहाँ उन्होंने अध्ययन किया।

एक बार फिर, यह ऐसी चीज़ है जिसे रोमन लोग पसंद करते थे। अब, उन्होंने इस तरह की चीज़ों को खा लिया। और चाहे जोसेफ़स ने वास्तव में ऐसा किया हो या नहीं, आप जानते हैं, मैं उस आदमी को झूठा नहीं कह रहा हूँ, लेकिन मैं शायद थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर कह सकता हूँ।

लेकिन किसी भी हालत में, वह कहता है कि उसने एक साधु के साथ तीन साल बिताए। आखिरकार, उसने फैसला किया कि वह एक फरीसी बनने जा रहा है। और हम थोड़ी देर बाद फरीसियों के बारे में और भी बहुत कुछ सुनेंगे।

लेकिन वे, निश्चित रूप से, यीशु के समय में एक बहुत ही प्रमुख, बहुत महत्वपूर्ण यहूदी संप्रदाय थे। और वे सुसमाचारों में बहुत अधिक उल्लेखित हैं। और सेंट पॉल नाम का एक व्यक्ति भी एक फरीसी था।

ई. में रोम भेजा गया था ताकि बंदी पुजारियों की रिहाई के लिए बातचीत में मदद की जा सके।

अब, वह उस समय एक युवा व्यक्ति था। और हमें वास्तव में यकीन नहीं है कि इस उम्र के किसी व्यक्ति को इतने महत्वपूर्ण मिशन पर क्यों भेजा गया होगा। लेकिन, आप जानते हैं, मुझे लगता है कि इस बात पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि ऐसा हुआ था।

हो सकता है कि वह इसमें अपनी भूमिका को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करे। लेकिन इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि वह वास्तव में रोम गया था, रोम में रहा था, इस वार्ता का हिस्सा था, और इन पादरियों को रिहा करवाया था। और जब वह रोम में रहने के बाद घर लौटा, तो उसने पाया कि, सबसे पहले, उसका जहाज डूब गया था, जो कि, निश्चित रूप से, उन दिनों हर किसी का जहाज डूब जाता था।

यह बस अपेक्षित है। इसलिए, वह जहाज़ के डूबने के अपने कारनामों के बारे में बताता है। फिर वह 67 ई. में वापस आता है, और पाता है कि देश, विशेष रूप से गैलिली, रोम के खिलाफ़ विद्रोह की कगार पर है।

खैर, इस समय तक, ऐसा लगता है कि युद्ध अपरिहार्य है, कि देश रोमनों के खिलाफ संघर्ष में उतरने वाला है। जोसेफस कुछ अन्य यहूदी अभिजात वर्ग के साथ मिलकर यह पता लगाने की कोशिश करता है कि वे नुकसान को कैसे सीमित कर सकते हैं। जोसेफस को इस संघर्ष में एक जनरल के रूप में नियुक्त किया जाता है।

वह जो कहता है उसके अनुसार वह गैलिली की रक्षा में एक प्रमुख व्यक्ति बन जाता है। वह दावा करता है कि वह वास्तव में विद्रोह का विरोध करता था, बिल्कुल शुरुआत से ही। अब, याद रखें, बेशक, वह रोमनों के लिए लिख रहा है।

तो, आप जानते हैं, मैं वास्तव में ऐसा नहीं करना चाहता था, लेकिन उन्होंने मुझे इसमें घसीटा। तो मैं क्या कर सकता था, है न? आप जानते हैं, मैं यहाँ लात मार रहा हूँ और चिल्ला रहा हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि अगर हम ऐसा करने जा रहे हैं, तो हम इसे सही तरीके से करेंगे। और यह वह अद्भुत तरीका है जिससे वह विद्रोह में अपनी भागीदारी को उचित ठहराता है।

वह कहता है, आप जानते हैं, मैं ऐसा नहीं करना चाहता था, लेकिन अगर मैं ऐसा करने जा रहा हूँ, तो मैं इसे अच्छी तरह से करने जा रहा हूँ। वह इस बात पर भी गर्व करता है कि उसने रोमनों के साथ इस संघर्ष के लिए अपने सैनिकों को कितनी अच्छी तरह से तैयार किया था। इसलिए वह गैलिली की रक्षा में था।

वह कहते हैं कि गैलिली के कुछ स्थानीय नेताओं ने भी उनका विरोध किया और रोमनों के खिलाफ लड़ने के लिए एक बड़ी सेना इकट्ठी की। स्थानीय मिलिशिया नेता जॉन ऑफ गिस्काला का नाम जोसेफस के लेखों में प्रमुखता से आता है। बहुत संभव है कि जॉन ऑफ गिस्काला ने इस संघर्ष का अपना विवरण लिखा हो, और जोसेफस रिकॉर्ड को सही करने की कोशिश कर रहा है, आप जानते हैं।

यह वाकई कुछ खास है। जब हम इस बारे में सोचते हैं, तो आपको लगता है कि रोम के खिलाफ विद्रोह करने वाले लोगों को मार दिया जाता होगा, लेकिन रोमन लोग ऐसा नहीं करते थे। किसी अजीब कारण से, वे उन लोगों को मौत की सज़ा देने से बहुत हिचकते थे जिन्हें वे, खास तौर पर कुलीन लोग मानते थे। सूली पर चढ़ाना वास्तव में उन लोगों के लिए आरक्षित था जिन्हें वे धरती का मैल समझते थे।

सिर कलम करना एक महान मृत्यु माना जाता था, और यह आमतौर पर उन लोगों को दिया जाता था जिन्होंने कुछ बहुत ही बुरे काम किए थे। लेकिन यहाँ हमारे पास ऐसे लोग हैं जिन्होंने रोम के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया, जो रोम में बैठे थे, जाहिर तौर पर सरकारी पेंशन पर, और इस बारे में संस्मरण लिख रहे थे कि उन्होंने रोम के खिलाफ कैसे विद्रोह किया, उन्होंने ऐसा क्यों किया, आदि, आदि, आदि। जॉन ऑफ गिस्काला जाहिर तौर पर इनमें से एक है, और इसलिए जोसेफस कह रहा है, हुह, ठीक है, अगर वह ऐसा कर सकता है, तो मैं इसे बेहतर तरीके से कर सकता हूँ।

तो, जोसेफस की कहानी का एक उल्लेखनीय पहलू जोतापथा मामला है। और यह वास्तव में उन जगहों में से एक है जहाँ आप बस अपना सिर हिलाते हैं और कहते हैं, नहीं, बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं। लेकिन जिस तरह से जोसेफस कहानी बताता है, ठीक है, तो वह गैलिली में है, और वह रोमन सैनिकों के खिलाफ गैलिली का बचाव कर रहा है।

और गलील वास्तव में विद्रोह का केंद्र था, और वे रोमनों से यहूदा की मुक्ति के लिए आंदोलन का असली केंद्र थे। और जब वे वहाँ थे, तो हमारे पास विद्रोह के बहुत से अलग-अलग गुट थे जो प्रत्येक अलग-अलग दिशाओं में खींच रहे थे। इसलिए, जोसेफस को उनके अनुसार, इसे एक साथ खींचने की कोशिश करने का काम दिया गया था, और उन्होंने गलील में कई शहरों को मजबूत किया, जिसमें जोतापाथा शहर भी शामिल था।

और यह प्रतिरोध का आधार बन जाता है। जैसे ही रोमन सेनाएँ आईं, कई शहरों ने तुरंत रोमनों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया क्योंकि उन्हें जल्दी ही पता चल गया कि विवेक ही वीरता का बेहतर हिस्सा है। और रोमन अपनी सुपर अनुशासित, सुपर अच्छी तरह से सशस्त्र और सुसज्जित, बेहद शक्तिशाली सेनाओं के साथ आए, और कई यहूदियों ने कहा, ठीक है, यह वह नहीं है जिसके लिए मैंने हस्ताक्षर किए थे।

इसलिए बहुत से शहरों ने तुरंत रोमनों के सामने आत्मसमर्पण करना शुरू कर दिया। कुछ प्रतिरोध हुआ, और जिन शहरों ने प्रतिरोध किया उनमें से कुछ मूल रूप से धूल में मिल गए। खैर, जोतापथा उन शहरों में से एक था जहाँ जोसेफस ने अपना पक्ष रखने का फैसला किया।

इसलिए वह वहाँ शहर को मजबूत बनाता है। रोमनों को 47 दिनों तक शहर की घेराबंदी करनी पड़ी, और जोसेफस हमें यह बताने में आनंद लेता है कि वह कितना चतुर था, जिस तरह से उन्होंने शहर की रक्षा की, और अंततः जो हुआ वह यह था कि टाइटस, जो सेना का नेतृत्व करने वाले जनरल का बेटा था, जो अंततः खुद एक रोमन सम्राट बन गया, रात में दीवारों पर चढ़ गया जब पहरेदार सो गए थे और उसने द्वार खोल दिए और रोमन सैनिकों को जोतापाथा में जाने दिया। लेकिन इस तरह, 47 दिनों के बाद, शहर रोमनों द्वारा ले लिया गया था।

जोतापाथा शहर के पास एक गुफा में छिप गए। तो, वे गुफा में क्या करते हैं? खैर, जोसेफस निश्चित रूप से ऐसा है, आप जानते हैं, अब वह कहता है, ओह, ये रोमन, वे बहुत भारी हैं। ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे हम संभवतः जीत सकें।

हमें आत्मसमर्पण करना होगा। ऐसी ज़बरदस्त ताकत के सामने आत्मसमर्पण करने में कोई शर्म नहीं होगी। भगवान ने आदेश दिया है कि रोमियों को पूरी दुनिया पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

और दूसरे सैनिक कहते हैं, नहीं, हम ऐसा नहीं करेंगे। इसके बजाय वे तय करते हैं कि वे सम्मानपूर्वक मृत्यु चाहते हैं। और इसलिए, वे आत्महत्या का समझौता करते हैं।

दूसरी ओर, जोसेफस कहते हैं, एक मिनट रुकिए, अपनी जान लेना, यह पाप होगा। वह कहते हैं, चलो इसके बजाय यह करते हैं। चलो एक दूसरे को मार देते हैं।

और जिस तरह से जोसेफस ने यह बताया, और मैंने कई बार अपने दिमाग में इसकी कल्पना करने की कोशिश की है, और मैं अभी तक पूरी तरह से समझ नहीं पाया हूँ, लेकिन वह कहता है कि उन सभी ने लॉटरी निकाली। और फिर पुरुषों ने जोड़े बनाए। लॉटरी में दिए गए नंबर के अनुसार, उन्होंने एक-दूसरे की आंत में चाकू घोंप दिया और मर गए।

और इसलिए, सैनिकों की पहली जोड़ी उठती है, और वे एक दूसरे को चाकू मारते हैं, और वे दोनों मर जाते हैं। और फिर अगली जोड़ी एक दूसरे को चाकू मारती है, और वे दोनों मर जाते हैं। खैर, यह सिर्फ इतना हुआ कि जोसेफस के पास आखिरी नंबर था।

आप सोच रहे होंगे कि शायद वह चिटों को ढेर करने या यहाँ कुछ और करने जैसा नहीं था। लेकिन किसी भी हालत में, जब बात अंतिम दो लोगों और अन्य लोगों की आती है, वे जोसेफस को चाकू मारने वाले होते हैं, तो जोसेफस कहता है, एक मिनट रुको, चलो यहाँ इस बारे में थोड़ा सोचते हैं। तो, इस समय खुद को मार डालने से हमें क्या फायदा होगा? तो, रोमन दयालु लोग साबित हुए हैं।

और, आप जानते हैं, चुप रहो, आप जानते हैं, आप यहाँ जो भी कहना चाहते हैं, आप जानते हैं, लेकिन रोमन इतने दयालु साबित हुए हैं, आइए हम खुद को उनके सामने पेश करें, और वे हम पर दया करेंगे। और हम इस भाग्य से बच पाएंगे। और शायद हम अपने देश के लोगों और अपने देशवासियों की मदद भी कर पाएंगे, उन्हें यह समझाकर कि वे रोमनों का विरोध न करें जिन्हें भगवान ने चुना है।

और इसलिए, उसका साथी सहमत हो जाता है। और इसलिए, जोसेफस जाता है और खुद को रोमनों के सामने पेश करता है। हमें नहीं पता कि इसके बाद साथी के साथ क्या हुआ, क्योंकि वह बस गायब हो जाता है।

लेकिन जोसेफस खुद को वेस्पासियन के सामने पेश करता है, जो गवर्नर है, या बल्कि रोमन सेना का प्रभारी जनरल है। और जोसेफस खुद को वेस्पासियन के सामने पेश करता है। और वह कहता है, वेस्पासियन कहता है, मैं उन सेनाओं का जनरल हूँ जो इस क्षेत्र के प्रभारी रहे हैं।

वह कहता है कि मैं अपने लोगों को आत्मसमर्पण के लिए राजी करने में आपकी मदद करना चाहता हूँ। और इससे भी बढ़कर, वह कहता है, मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ, क्योंकि मैं एक भविष्यवक्ता हूँ। जोसेफस कहते हैं, और उन्होंने बाद में अपनी कुछ अन्य पुस्तकों में इसकी

व्याख्या की, कि उनका मानना है कि उनके पास पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियों की व्याख्या करने की अलौकिक क्षमता थी।

वह संभवतः दानिय्येल की पुस्तक का संदर्भ दे रहा है और संभवतः दानिय्येल के चार जानवरों के दर्शन का भी। उनका मानना था कि दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी कि रोम पूरी दुनिया पर राज करेगा।

कम से कम वह यही कहता है। और इसलिए, वह वेस्पासियन, जनरल से कहता है, मैं, अपनी भविष्यवाणियों की क्षमताओं के कारण, इन भविष्यवाणियों की व्याख्या कर सकता हूँ। और ये भविष्यवाणियाँ मुझे बताती हैं कि तुम, वेस्पासियन, पूरी दुनिया पर राज करोगे।

ठीक है। अब मैं विस्तार से बता सकता हूँ। मैंने इस बारे में एक बहुत लंबा लेख लिखा है।

लेकिन यहाँ तर्क का एक हिस्सा यह प्रतीत होता है कि जोसेफस ने डैनियल की पुस्तक की व्याख्या इस प्रकार की कि जो पूरी दुनिया पर शासन करेगा वह पूर्व से आएगा। वास्तव में, जोसेफस का कहना है कि उन दिनों लोगों के बीच एक अस्पष्ट भविष्यवाणी प्रसारित हो रही थी जिसमें कहा गया था कि एक शासक पूर्व से आएगा और पूरी दुनिया पर शासन करेगा। और, आप जानते हैं, हम इसे यीशु के बारे में सोचे बिना नहीं पढ़ सकते।

लेकिन जोसेफस कहते हैं, बेशक, यह वेस्पासियन का संदर्भ था। वैसे भी, जोसेफस वेस्पासियन से कहता है कि वह पूरी दुनिया का शासक होगा। वेस्पासियन कहते हैं, ठीक है, देखते हैं कि यह यहाँ कैसे चलता है।

और उसने जोसेफस को जंजीरों में जकड़ लिया। लेकिन वह कहता है, अगर तुम जो कहते हो वो सच हो जाता है, तो मैं तुम्हें रिहा कर दूंगा और तुम्हें अच्छा इनाम दूंगा। खैर, बेशक, आखिरकार, ऐसा होता है।

जोसेफस आगे बढ़ता है और वेस्पासियन की सेनाओं के साथ घूमता है और उन्हें रोमन सेना के सामने आत्मसमर्पण करने के लिए मनाने की कोशिश करता है। अब, आपको यह जानकर आश्चर्य नहीं होगा कि यहूदियों के मन में कई, कई, कई सालों तक जोसेफस के बारे में बहुत अच्छी भावनाएँ नहीं थीं। वास्तव में, जोसेफस के लेखन को ईसाइयों ने सुरक्षित रखा था, यहूदियों ने नहीं।

लेकिन किसी भी हालत में, जोसेफस निश्चित रूप से एक गद्दार था। और फिर भी उसके शब्द अंततः सच हो गए क्योंकि वेस्पासियन रोम का सम्राट बन गया। और जोसेफस को बहुत बढ़िया इनाम मिला।

इसलिए, वह आगे बढ़ा और यहूदियों से आत्मसमर्पण करने का आग्रह किया। युद्ध समाप्त होने के बाद, वह रोम चला गया। उसे भूमि अनुदान प्राप्त हुआ।

उन्हें रोमियों से यहूदिया में भूमि अनुदान मिला, लेकिन उन्होंने रोम में रहना पसंद किया। इसलिए वे रोम चले गए। उन्हें रोम की नागरिकता दी गई और उन्हें शाही महल में ठहराया गया।

और वहाँ, बेशक, उन्होंने वही किया जो कई पुराने जनरल करते हैं। उन्होंने अपने संस्मरण लिखे। उनकी पहली रचना का नाम था यहूदी युद्ध।

और यह 79 ई. से कुछ समय पहले लिखा गया था। उनकी अगली बची हुई कृति, द एंटीक्विटीज, द वीटा, द लाइफ ऑफ फ्लेवियस जोसेफस, उनकी आत्मकथा की तरह थी। और फिर एक बहुत ही महत्वपूर्ण रचना, जिसकी उतनी सराहना नहीं की गई जितनी की जानी चाहिए, अगेंस्ट एपियन नामक रचना, जो यहूदी धर्म के विरोधियों के खिलाफ बचाव के लिए एक तरह से क्षमाप्रार्थी रचना थी।

तो, यहाँ इनके बारे में बात करते हैं। यहूदी युद्ध विद्रोह का एक विवरण है। यह लगभग 66 ई. में शुरू होता है और 73 ई. तक जाता है।

यहाँ जोसेफस को प्रस्तुत किया गया है। यह मुख्य रूप से जोसेफस के बारे में है, आप जानते हैं, लेकिन वह खुद को एक समर्पित सैनिक के रूप में प्रस्तुत करता है जो अपने कर्तव्यों को पूरी लगन से निभाता है। वह दावा करता है कि वह एक वस्तुनिष्ठ लेखक है, जो ग्रीक इतिहास के अनुसार अपनी रचनाएँ लिखता है।

फिर से, थ्यूसीडाइड्स उनके आदर्श प्रतीत होते हैं। इस कार्य के लेखन में एक दिलचस्प बात यह है कि वह स्वीकार करते हैं कि उन्हें ग्रीक भाषा बहुत अच्छी तरह से नहीं आती थी, जो आपको उस समय यहूदी धर्म की स्थिति, फिलिस्तीनी यहूदी धर्म के बारे में कुछ बताता है। जोसेफस ने अन्य लोगों से उनके लिए ग्रीक भाषा लिखवाई।

वह खुद ग्रीक में नहीं लिख सकता था। इसलिए भले ही वह एक उच्च वर्ग का, सुशिक्षित यहूदी था, फिर भी उसने ग्रीक नहीं लिखा। और मेरा मानना है कि कई... मैं फिर से भोंपू के छत्ते में हाथ डालने जा रहा हूँ, लेकिन मेरा मानना है कि विशेष रूप से कई नए नियम के लेखक इस बात का ज़्यादा अनुमान लगाते हैं कि इन दिनों में आपका औसत यहूदी ग्रीक में कितना शिक्षित था।

और एक बार मुझे यह सुझाव देकर बहुत गुस्सा आया कि यीशु को ग्रीक नहीं आती थी। लेकिन अगर जोसेफस को ग्रीक नहीं आती थी, तो मुझे नहीं लगता कि यीशु को भी ग्रीक आती होगी। लेकिन वैसे भी, इस काम की कई प्रवृत्तियाँ हैं।

सबसे पहले, जोसेफस की चापलूसी करना, बेशक। दूसरी बात यह है कि इस काम में, वह विशेष रूप से कुछ निम्न-स्तरीय उग्रवादियों पर विद्रोह का दोष मढ़ने की कोशिश कर रहा है। अब, यह अभिजात वर्ग नहीं था, यह अच्छे शिक्षित यहूदी नहीं थे जो ऐसा कर रहे थे।

यह निम्न वर्ग था। और रोमनों की चापलूसी, चापलूसी वाली तस्वीर, महान और कुलीन लोगों के रूप में, और विशेष रूप से टाइटस, जो इस समय सम्राट था, बेशक। इसलिए, जोसेफस को पता

था कि उसकी रोटी किस तरफ से मक्खन लगा रही है, और टाइटस को कैप्टन अमेरिका और सुपरमैन जैसी चीज़ के बीच का मिश्रण माना जाता है।

वह विद्रोह के परिणाम को ईश्वर की इच्छा और यहूदियों के लिए ईश्वर के प्रति उनकी बेवफाई के लिए दंड के रूप में दर्शाता है। इसलिए, वह रक्तपात, मंदिर के विनाश का दोष अपने ही लोगों पर डालता है। जोसेफस द्वारा लिखी गई एक और रचना है द एंटिक्विटीज।

यह एक बहुत लंबी रचना है, और यह यहूदी लोगों का इतिहास है, जो अब्राहम से शुरू होकर रोमन शासकों के समय तक चलता है। अब, इस सामग्री का अधिकांश हिस्सा, हम पुराने नियम में पूरी कहानी पढ़ सकते हैं, क्योंकि मूल रूप से यही उसका स्रोत है। लेकिन हम इसे दो हिस्सों में विभाजित कर सकते हैं।

पहला भाग यरूशलेम के विनाश तक जाता है, जो नबूकदनेस्सर का समय है। और फिर दूसरा भाग रोमनों के अधीन यरूशलेम के दूसरे विनाश के कगार तक जाता है। इसलिए, वह वास्तव में एक उल्लेखनीय संगठनात्मक पैटर्न का उपयोग करता है।

लेकिन पुराने नियम के समय के लिए उनका मुख्य स्रोत बाइबल है, और उन्होंने वास्तव में बाइबल में जो कुछ भी नहीं पढ़ा है, उसमें बहुत कम जोड़ा है, सिवाय इसके कि जिस तरह से वे इसे बताते हैं, क्योंकि उनका दृष्टिकोण काफी उल्लेखनीय है। उनके इंटरटेस्टामेंटल अकाउंट में अपोक्रीफा का उपयोग किया गया है, विशेष रूप से 1 और 2 मैकाबीज़ की पुस्तकें, जिनके बारे में हम थोड़ी बात करने जा रहे हैं, और दमिश्क के निकोलस नामक एक व्यक्ति के कार्यों का उपयोग किया गया है। निकोलस वास्तव में राजा हेरोद द ग्रेट के दरबारी इतिहासकार थे, और जोसेफस को उनके कार्यों तक पहुँच थी।

तो यह बहुत उल्लेखनीय है। अब हमारे पास वह स्रोत नहीं है, लेकिन हमारे पास जोसेफस द्वारा उस स्रोत का उपयोग करने के बारे में जानकारी है। ऐसा लगता है कि उसके पास कुछ रोमन अभिलेख भी थे।

तो, इस अर्थ में, पुरावशेषों के बारे में उनका विवरण हमें वास्तव में उस युग की एक अच्छी तरह से गोल-गोल तस्वीर देता है। यहाँ उनकी एक प्रमुख प्रवृत्ति यहूदियों को एक प्राचीन और बुद्धिमान लोगों और विदेशी अधिपतियों के आदर्श विषयों के रूप में चित्रित करना है। रोमियों के लिए, नया बुरा माना जाता था।

नया कुछ नया माना जाता था। पुरानी चीज़ों को अच्छा माना जाता था। रोम के लोग मिस्रियों से इसलिए प्यार करते थे क्योंकि वे प्राचीन मिस्र के स्मारकों को देख सकते थे और वे देख सकते थे कि मिस्रियों के पास एक अद्भुत प्राचीन पुरानी संस्कृति थी।

वे यूनानियों को इसलिए पसंद करते थे क्योंकि यूनानियों के पास उनकी उम्र के बारे में कहानियाँ थीं। लेकिन यहूदियों को यहूदियों के बारे में कुछ भी पता नहीं था, और इसलिए उन्हें लगता था कि यहूदी दुनिया के परिदृश्य में कुछ नए लोग हैं। खैर, जोसेफस इसे ठीक करने के लिए तैयार है।

तो, वह हमें प्राचीन वस्तुओं में बताता है कि कैसे अब्राहम ने मिस्रवासियों को पिरामिड बनाने का तरीका सिखाया, इस तरह की चीजें। अब्राहम ज्योतिष के जनक थे। जोसेफस ने इस तरह की बहुत सी अद्भुत चीजों का श्रेय यहूदियों को दिया है।

और, बेशक, यह विचार कि जब भी यहूदियों पर विदेशियों ने विजय प्राप्त की, तो वे वास्तव में उन लोगों के लिए लाभकारी साबित हुए जिन्होंने उन पर विजय प्राप्त की थी। इसलिए, जाहिर तौर पर यह जीवन युद्ध के विवरण का एक संक्षिप्त संस्करण था। और यह टिबेरियस के न्यायाधीश नामक एक व्यक्ति की प्रतिक्रिया के रूप में लिखा गया था।

तिबेरियस का न्याय गलील में है, और न्याय ने जोसेफस के युद्ध के विवरण को पढ़कर कहा कि ऐसा नहीं हुआ था। इसलिए, हम जोसेफस की बातों के कारण न्याय की कही गई बातों को थोड़ा-बहुत समझ सकते हैं। लेकिन जोसेफस के पास युद्ध के बारे में एक अलग विवरण है, मुख्य रूप से विवरण में।

मेरा मतलब है, सामान्य रूपरेखा लगभग एक जैसी है। लेकिन फिर से, जोसेफस और उच्च वर्ग के यहूदियों को विद्रोह में अनिच्छुक प्रतिभागियों के रूप में दर्शाया गया है। उनका उद्देश्य केवल नुकसान को कम करना था।

और जीवन में जोसेफस को एक भाग्यवान व्यक्ति के रूप में दर्शाया गया है। जूलियस सीज़र के बारे में प्रचलित कहानियों की तरह, कि कैसे उनके जन्म के समय एक धूमकेतु प्रकट हुआ था। जोसेफस के पास अपने बारे में ऐसी ही कहानियाँ हैं और कैसे उन्हें युवावस्था से ही दुनिया के महान व्यक्तियों में से एक बनने के लिए स्पष्ट रूप से नियत किया गया था।

और फिर अंत में, अगेंस्ट अपियन । और अगेंस्ट अपियन भी यहूदियों की प्राचीनता के बारे में जाना जाता है। और यहाँ, प्राचीनता से हमारा क्या मतलब है? बड़ा सवाल यह है कि क्या यहूदी एक प्राचीन लोग हैं? और यही वह बात है जिस पर जोसेफस मुख्य रूप से बहस करने की कोशिश कर रहा है।

उनका एक मुख्य तर्क यह है कि यहूदी एक प्राचीन लोग हैं। और इसलिए इस पुस्तक का पहला भाग रोमनों, यूनानियों और मिस्रियों द्वारा लगाए गए आरोपों के विरुद्ध यहूदियों का बचाव करना है, विशेष रूप से मनेथो नामक एक मिस्री द्वारा, कि यहूदी एक प्राचीन लोग नहीं थे। इसलिए, वह यूनानी इतिहासकारों की उनकी अशुद्धि के लिए आलोचना करते हैं, जो अपने तरीके से एक विडंबनापूर्ण बात है।

वह मिस्र के मनेथो के इस कथन का खंडन करता है, जिसने कहा था कि यहूदियों को मिस्र से इसलिए निकाल दिया गया क्योंकि वे कुष्ठ रोगियों की जाति थे। और हाँ, यह ऐसी बात है जो आपकी प्रतिष्ठा पर एक तरह का दाग छोड़ती है। दूसरे भाग में, वह यहूदियों के बारे में अपियन की निंदा का खंडन करता है।

और इनमें निर्गमन का विवरण जैसी चीजें शामिल थीं, जो मनेथो पर आधारित थी। और साथ ही, यह आरोप भी था कि यहूदी गधे के सिर की पूजा करते थे। और ग्रीस में यह अद्भुत अफवाह फैली हुई थी, कि जब ग्रीक सेनापति, और विशेष रूप से रोमन सेनापति पोम्पी, पवित्रतम स्थान में गए, तो उन्हें वहां गधे का सिर मिला।

तो यही वह है जिसकी यहूदी पूजा करते थे। रोम में एक अद्भुत भित्तिचित्र मिला है, जिसमें एक यहूदी को गधे के सिर के सामने झुकते हुए दिखाया गया है। और उसके नीचे लिखा है, यहाँ एक यहूदी व्यक्ति अपने भगवान की पूजा कर रहा है।

रोम में भित्तिचित्र एक बड़ी चीज़ थी। वैसे भी, जोसेफ़स ने कहा, नहीं, हम गधे के सिर की पूजा नहीं करते। इसके अलावा, यह अफ़वाह भी थी कि यहूदी हर साल एक यूनानी की बलि चढ़ाते थे।

फिर, यह कहानी थी कि जब पोम्पी ने पवित्रतम स्थान में प्रवेश किया, तो उसने बहुत सी चीजें देखीं। लेकिन उनमें से एक चीज़ यह थी कि उसने एक यहूदी को बंधा हुआ पाया, या यूँ कहें कि एक यूनानी को वहाँ बंधा हुआ पाया, जिसकी बलि दी जाने वाली थी। ओह, कृपया, धन्यवाद, मुझे इन भयानक, भयानक यहूदी लोगों से बचाओ।

तो हाँ, यह पूरी बात है जिसे हम रक्त परिवाद कहते हैं। आप जानते हैं, यह बहुत पुराने समय से चला आ रहा है, और यह बार-बार सामने आता रहता है। बेशक, हम जानते हैं कि जब यह कहा गया कि यहूदी यूनानियों और विशेष रूप से ग्रीक शिशुओं की बलि दे रहे थे, तो अंततः, जब ईसाई रोमन साम्राज्य में प्रमुख हो गए, तो यह आरोप ईसाइयों पर डाल दिया गया।

ये ईसाई थे जो खून पी रहे थे, आप जानते हैं। वे किसका खून पी रहे थे? वे गैर-यहूदी बच्चों का खून पी रहे थे, बेशक, आप जानते हैं। और अब, बेशक, हम जानते हैं कि हॉलीवुड की मशहूर हस्तियाँ ऐसा कर रही हैं, वे कहते हैं।

लेकिन किसी भी मामले में, मुद्दा यह है कि यह एक बहुत ही प्राचीन प्रकार का आरोप है जो बार-बार उभरता रहता है। और ऐसा लगता है कि यह किसी तरह हमारे दिमाग में है, यह सबसे जघन्य चीजों में से एक है जो हम सोच सकते हैं। और इसलिए यह उन आरोपों में से एक है जो यूनानी और रोमन यहूदियों के खिलाफ लगा रहे थे।

और इसलिए, जोसेफ़स को इसका खंडन करना पड़ा। और साथ ही, यह विचार कि यहूदियों ने कोई प्रसिद्ध व्यक्ति पैदा नहीं किया था। और इसलिए यहाँ फिर से, जोसेफ़स को यह बताना पड़ा कि यहूदियों ने मूल रूप से सब कुछ कैसे आविष्कार किया था।

तो, हम कह सकते हैं कि यहाँ कुछ उल्लेखनीय अंश अतिशयोक्तिपूर्ण हैं, लेकिन यह कई मायनों में आकर्षक पढ़ने योग्य है। लेकिन अप्पियन के विरुद्ध पुस्तक का एक और महत्वपूर्ण पहलू यहूदी धर्मग्रंथों के निर्माण की चर्चा है, और इस संदर्भ में यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। और जब हम अपोक्रीफ़ा के बारे में बात करेंगे तो हम उस पर वापस आएँगे।

फिलो ऑफ एलेक्जेंड्रिया। अब, मैं फिलो ऑफ एलेक्जेंड्रिया के बारे में ज्यादा बात नहीं करने जा रहा हूँ, क्योंकि उन्होंने बहुत ज्यादा इतिहास नहीं लिखा है। लेकिन वास्तव में, वे इस युग के सबसे विपुल यहूदी लेखकों में से एक थे।

उन्होंने अपने पीछे बहुत सी किताबें छोड़ी हैं, और उनमें से बहुत सी आज भी बची हुई हैं। फिलो लगभग 20 ईसा पूर्व से लेकर लगभग 50 ईस्वी तक जीवित रहे। वे अलेक्जेंड्रिया में रहते थे, जो पूर्वी दुनिया में दर्शन और संस्कृति का केंद्र, केंद्र था।

अलेक्जेंड्रिया मिस्र के डेल्टा क्षेत्र के पास था, जिसकी स्थापना सिकंदर महान ने की थी। इसलिए, वह एक यहूदी कुलीन व्यक्ति था। वह एक दार्शनिक है।

वह एक तरह के प्लेटोनिक स्कूल के दार्शनिक थे। उन्हें प्लेटो और अरस्तू के दर्शनशास्त्रों का बहुत अच्छा ज्ञान था। और उन्होंने यहूदी धर्मशास्त्र को समझाने के लिए बहुत से विचारों, खास तौर पर प्लेटो के विचारों का इस्तेमाल किया।

अलेक्जेंड्रिया के फिलो बाद में ईसाइयों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गए, खासकर ऑगस्टीन के लिए, संत ऑगस्टीन, जिन्होंने प्लेटो का इस्तेमाल उसी तरह किया जैसे फिलो ने किया था। उनके कुछ महत्वपूर्ण कार्यों में एवरी गुड मैन इज फ्री, उनका एम्बेसी टू गाइयस शामिल है, जो उनका ऐतिहासिक कार्य है, जो बताता है कि कैसे वे और यहूदियों का एक समूह सम्राट कैलीगुला से बात करने के लिए रोम गए थे, जिन्होंने यहूदियों को यरूशलेम के मंदिर में अपनी एक मूर्ति स्थापित करने के लिए मजबूर करने की कोशिश की थी। और इसलिए, कैलीगुला को उस योजना से बाहर निकालने के लिए फिलो को रोम जाना पड़ा।

प्रथम और द्वितीय मैकाबीज़ दोनों ही एपोक्रीफा में हैं, जो यूनानियों के विरुद्ध यहूदी विद्रोह के दो बहुत अलग ऐतिहासिक विवरण हैं। प्रथम मैकाबीज़ मूल रूप से हिब्रू या अरामी भाषा में लिखा गया था। मैं हिब्रू के बारे में इसलिए सोचता हूँ क्योंकि यह एक राष्ट्रवादी दस्तावेज़ है और इस युग में यहूदियों के लिए राष्ट्रवाद की भाषा हिब्रू थी।

हालाँकि इस समय तक अरामी भाषा का इस्तेमाल पहले से ही ज्यादा हो चुका था, लेकिन हिब्रू को अभी भी राष्ट्रीय भाषा माना जाता था। और अगर आप वाकई लोगों से जुड़ना चाहते थे, तो आप हिब्रू का इस्तेमाल करते थे। इसलिए मेरा मानना है कि संभवतः यह मूल रूप से हिब्रू में ही लिखा गया था।

लेकिन यह केवल ग्रीक अनुवाद में ही बचा है। फिर से, यह एक ऐसा काम है जिसमें यहूदियों की बहुत ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी। इसका कभी भी हस्मोनियों में उल्लेख नहीं किया गया है, जो लोग यूनानियों और उनके नेतृत्व के खिलाफ इस विद्रोह के प्रभारी थे।

अपने धार्मिक दृष्टिकोण में, यह बहुत दिलचस्प है क्योंकि इसमें सद्कियों की तरह की भावना है। और फिर, यह शब्द इतिहास के इस मोड़ पर एक तरह का कालभ्रम है। लेकिन एक बात जो हम पढ़ते हैं, उदाहरण के लिए, फर्स्ट मैकाबीज़ में पाए गए भाषणों में से एक में यह है कि जनरल अपने सैनिकों को यह कहकर प्रोत्साहित करने की कोशिश कर रहा है कि अगर वे बाहर जाते हैं

और मर जाते हैं, तो उनके नाम का सम्मान होगा और भले ही वे मर जाएं, उन्हें महान लोगों के रूप में याद किया जाएगा और उनके परिवारों को उनके बाद सम्मान मिलेगा।

मृत्यु के बाद के जीवन या मृतकों के पुनरुत्थान या इस तरह की किसी भी चीज़ का कोई उल्लेख नहीं है। ध्यान सम्मान के महत्व और इस समय इस दुनिया में सही काम करने पर है। अब, यह दूसरे मैकाबीज़ के विपरीत है।

दूसरा मैकाबीज़ एक संक्षिप्त संस्करण है, जैसा कि हमारे एपोक्रीफा में है, जो मूल रूप से यूनानियों के खिलाफ इस विद्रोह का एक बहु-खंड विवरण था। यह मूल रूप से मिस्र के अलेक्जेंड्रिया में लिखा गया था, और यह ग्रीक भाषा में लिखा गया था। कुछ मायनों में, जब आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं, तो यह आपको ईसाई शहीदों की याद दिलाती है।

दूसरे शब्दों में, यह पीड़ा के इन उदाहरणों का उपयोग लोगों को उत्पीड़न के खिलाफ दृढ़ रहने, उन लोगों के खिलाफ मजबूती से खड़े होने के लिए प्रोत्साहित करने के तरीके के रूप में करता है जो उन्हें उनके विश्वास से अलग करने की कोशिश करेंगे। और इसलिए, हमारे पास एक यहूदी माँ की यह उल्लेखनीय रूप से भयानक कहानी है जो अपने सात बेटों को मौत के घाट उतारने देती है और यातना के बारे में अद्भुत विवरण देती है। और उनमें से प्रत्येक भगवान की स्तुति गाते हुए और उन शापों के बारे में बात करते हुए मर जाता है जो उन लोगों पर पड़ेंगे जिन्होंने भगवान के लोगों को नाराज किया है और जिन्होंने उन्हें परेशान किया है।

लेकिन धार्मिक दृष्टिकोण में यह अधिक फरीसी है, क्योंकि यहाँ यह यहूदी माँ, जो अपने बेटों को त्यागती है, उन्हें यह कहकर प्रोत्साहित करती है कि भले ही वे अभी मर जाएँ, लेकिन वे अपनी मृत्यु के बाद जी उठेंगे और अपने जीवन को देने के बाद उन्हें सम्मान और महिमा मिलेगी। और उनमें से एक बेटा अपने उत्पीड़कों से यह कहते हुए मर भी जाता है कि, वह कहता है, तुम मेरी जान ले सकते हो, लेकिन मैं फिर से जी उठूँगा। लेकिन तुम्हारे लिए, यह दिलचस्प है, वह कहता है, तुम्हारे लिए, कोई पुनरुत्थान नहीं होगा।

इसलिए, हम यहाँ यह विचार बनते हुए देखते हैं कि धर्मी लोग महिमा और सम्मान के जीवन में उठेंगे, जबकि अधर्मी लोग सिर्फ गंदगी में पड़े रहेंगे। अन्य साहित्यिक स्रोत जो प्रकृति में इतने ऐतिहासिक नहीं हैं, वे भी हमें यहाँ हमारे काल को भरने में मदद करते हैं; ये प्राचीन मान्यताओं, प्राचीन संस्कृति, इत्यादि पर प्रकाश डालते हैं। इनमें, बेशक, बाइबल भी शामिल है, क्योंकि बाइबल की कुछ पुस्तकें वास्तव में इस अवधि में लिखी गई हैं जिसे हम अंतर-नियम अवधि कहेंगे।

बेशक, विद्वानों के बीच तिथि निर्धारण के बारे में बहुत बहस है, खास तौर पर पुराने नियम की कुछ पुस्तकों के बारे में, जैसे कि दानियेल, एस्तेर और सभोपदेशक, साथ ही अन्य पुस्तकों के कुछ अंश, जैसे कि जकर्याह की पुस्तक के कुछ अंश, उदाहरण के लिए, वास्तव में इसी दौरान लिखे गए थे, जिसे हम अंतर-नियम काल कहते हैं। अब, फिर से, यह सब बहस का विषय है, और इसमें किसी भी तरह की निश्चितता पाना मुश्किल है, लेकिन जिस बात से इनकार नहीं किया जा सकता, जिसे नकारा नहीं जा सकता वह यह है कि ये ग्रंथ अंतर-नियम काल में घटित

परिस्थितियों और स्थितियों पर बहुत अधिक प्रकाश डालते हैं। कई भविष्यसूचक ग्रंथ अंतर-नियम काल में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में बात करते हैं, और इनमें से सबसे महत्वपूर्ण है दानियेल, जिसके बारे में, जबकि कई बाइबिल विद्वानों का मानना है कि यह इस युग में लिखा गया था, चाहे हम मानें कि यह यहाँ लिखा गया था या नहीं, हम जो जानते हैं वह यह है कि यह हमें उस युग के बारे में कुछ विवरण देता है जो हमें अन्यथा नहीं पता होता।

उदाहरण के लिए, इस युग के कुछ यूनानी राजाओं के बीच संघर्ष के बारे में कुछ विवरण हैं जिन्हें हम केवल दानियेल की पुस्तक से जानते हैं, इसलिए यदि हम इन सभी को गहराई से जानने के लिए तैयार हैं तो इनमें से कुछ ग्रंथों में कुछ रोचक जानकारी मिल सकती है। और अब अपोक्रीफा की बात आती है। मैं अपोक्रीफा का कई बार उल्लेख कर चुका हूँ।

अपोक्रीफा कहानियों और ग्रंथों का एक संग्रह है, जो मूल रूप से यहूदी हैं, जिन्हें बाइबल से हटा दिया गया था, लेकिन उन्हें ग्रीक अनुवादों में शामिल किया गया है जिनका उपयोग शुरुआती ईसाइयों द्वारा किया गया था। अपोक्रीफा के बारे में बहुत सारे दिलचस्प सवाल हैं क्योंकि अभी भी बहुत सी चीजें हैं जो हम नहीं समझ पाए हैं कि यह कहाँ से अस्तित्व में आया और कैसे अस्तित्व में आया। दिलचस्प बात यह है कि अपोक्रीफा की किसी भी किताब का उल्लेख अपोक्रीफा में नहीं किया गया है।

सौ साल बाद, आरंभिक चर्च के पिताओं ने अपोक्रीफा का व्यापक रूप से उपयोग किया। हम संत जेरोम के समय में पहुँचते हैं, जिन्होंने बाइबल का ग्रीक से लैटिन में अनुवाद किया था, और जेरोम ने अपोक्रीफा को अस्वीकार कर दिया था। वास्तव में, वह वह व्यक्ति है जिसने इस वाक्यांश अपोक्रीफा, इस शब्द को इसके लिए बनाया था।

उन्होंने कहा कि ये पुस्तकें अस्पष्ट हैं; हम ठीक से नहीं जानते कि वे कहाँ से आई हैं, और इसलिए, इस कारण से, उन्हें नहीं लगता कि उन्हें धर्मग्रंथ माना जाना चाहिए। और उनके लैटिन पाठ में, ये पुस्तकें वास्तव में उनके अनुवाद से हटा दी गई थीं। फिर अगली पीढ़ी ने, जैसे ही जेरोम का निधन हुआ, उन्हें जल्दी से फिर से वापस डाल दिया।

इसलिए, जेरोम के पास वह आकर्षण नहीं था जो उसने सोचा था। इसलिए, अभी भी इस बारे में सवाल हैं कि क्यों, कहाँ, कैसे और किसके लिए इन्हें धर्मग्रंथ माना जाता था। ये किताबें 400 ईसा पूर्व के बीच लिखी गई थीं, संभवतः वास्तव में सबसे पुरानी किताब शायद 300 ईसा पूर्व या उसके आसपास की हो सकती है।

लेकिन वैसे भी, अपोक्रीफा की नवीनतम पुस्तकें संभवतः 90 ई. के आसपास लिखी गई थीं, लेकिन यह भी एक यहूदी पाठ है और मंदिर के विनाश से संबंधित घटनाओं के बारे में बताता है। प्रोटेस्टेंट अपोक्रीफा के पाठ को गैर-आधिकारिक मानते हैं। हम अपोक्रीफा को धर्मग्रंथ के रूप में, आधिकारिक के रूप में नहीं पढ़ते हैं।

हम इस मामले में जेरोम का अनुसरण करते हैं। हम इस मामले में मार्टिन लूथर का और भी करीब से अनुसरण करते हैं। लेकिन मुद्दा यह है कि हमारी प्रोटेस्टेंट बाइबल में ये कार्य शामिल नहीं हैं।

वे अभी भी कैथोलिक बाइबल में शामिल हैं। इस अवधि में यहूदी इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए, मैकाबीज़ की पुस्तकें विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। और हम उनके बारे में बात करेंगे और उन पर व्यापक रूप से निर्भर करेंगे।

जोसेफस ने अपनी पुनर्कथन में इन पर काफी हद तक भरोसा किया। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि जोसेफस ने भी यह स्पष्ट किया है कि उन्होंने इन पुस्तकों को धर्मग्रंथ नहीं माना। इसलिए, 1 और 2 मैकाबीज़ की पुस्तकों के अलावा, अपोक्रिफा की सामग्री में आख्यान, कहानियाँ, कुछ आकर्षक कहानियाँ शामिल हैं।

टोबिट की कहानी संभवतः अपोक्रिफा की पुरानी किताबों में से एक है। यह एक ऐसे युवक की कहानी है जिसे एक राक्षस पर विजय पाने के लिए एक देवदूत की मदद मिलती है। और अंत में, उसे लड़की मिल जाती है।

तो, यह एक प्यारी सी मनोरंजक कहानी है। जूडिथ की कहानी एक युवा महिला की कहानी है जो अपनी चालाकी से एक विदेशी जनरल को बहकाती है और उसका सिर काट लेती है। कहानी के अंत में, वह उसका सिर सबके सामने पेश करती है और कहती है, देखो, देखो, मैंने तुम्हारे जनरल को मार दिया।

तो, हाँ, यह एक तरह की उल्लेखनीय कहानी है। कभी-कभी इसे एंटी-एस्तेर कहा जाता है क्योंकि जूडिथ एक ऐसी महिला है जो अपने लोगों को बचाने के लिए अपने यहूदी सिद्धांतों या अपने यहूदी सम्मान से समझौता करने से इनकार करती है और फिर भी अंत में अपने लोगों को बचा लेती है। सुज़ाना की कहानी की किताब।

सुज़ाना की कहानी और बेले और ड्रैगन की कहानी। ये डैनियल की किताब में जोड़ी गई कहानियाँ हैं। डैनियल के बारे में ये कहानियाँ हैं जिन्हें कभी-कभी दुनिया की सबसे पुरानी जासूसी कहानियाँ कहा जाता है क्योंकि इन कहानियों में, डैनियल अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करके सुज़ाना के मामले में कुछ दुष्ट बुतपरस्त पुजारियों और कुछ दुष्ट यहूदियों की साज़िशों को उजागर करता है।

सबसे पहले, एज्रा की कहानी एज्रा की है, लेकिन इसे एक अलग दृष्टिकोण से बताया गया है और यह पाठ एक तरह से ग्रीक दृष्टिकोण से लिखा गया है। तीसरा, मैकाबीज़ एक तरह से फर्स्ट मैकाबीज़ का प्रीक्वल है और यह कुछ उत्पीड़न के बारे में बताता है जिसके कारण विद्रोह हुआ। चौथा, मैकाबीज़, सेकंड मैकाबीज़ की कहानियों का विस्तार है।

इनमें से सभी कैथोलिक बाइबिल में नहीं हैं। इनमें से कुछ कहानियाँ वास्तव में अन्य संग्रहों में दिखाई देती हैं जिन्हें अन्य लोग अपोक्रिफा मानते हैं। बाइबिल के ग्रंथों में एस्तेर की पुस्तक में कुछ अतिरिक्त बातें शामिल हैं और इनमें कई प्रार्थनाएँ शामिल हैं।

इनमें एस्तेर की पुस्तक की शुरुआत में एक दर्शन और एस्तेर की पुस्तक के अंत में एक दर्शन की व्याख्या शामिल है। जैसा कि आप जानते होंगे, एस्तेर पुराने नियम की एकमात्र पुस्तक है

जिसमें ईश्वर का कोई उल्लेख नहीं है और जाहिर तौर पर अंतर-नियम अवधि में कोई व्यक्ति इस तथ्य से थोड़ा परेशान था। न केवल ईश्वर का कोई उल्लेख नहीं है, बल्कि प्रार्थना का कोई उल्लेख नहीं है, बलिदान का कोई उल्लेख नहीं है, धर्मपरायणता का कोई उल्लेख नहीं है, यरूशलेम का कोई उल्लेख नहीं है।

वास्तव में, यहूदी धर्म का कोई दिखावा नहीं है। खैर, सेप्टुआजेंट, अपोक्रीफा ने इसे ठीक कर दिया और ग्रीक संस्करण में शुरुआत में यह दर्शन शामिल है जहाँ मोर्दकै को एक दर्शन दिखाई देता है जो यहूदी लोगों पर आने वाली मुसीबत की भविष्यवाणी करता है। इसमें मोर्दकै द्वारा एक बहुत लंबी प्रार्थना, एस्तेर द्वारा एक बहुत लंबी प्रार्थना और फिर पुस्तक के अंत में दर्शन की व्याख्या शामिल है।

अजर्याह की प्रार्थनाएँ और तीन इब्रानी बच्चों के गीत की कहानी। तो, ये दानिय्येल की पुस्तक में जोड़े गए हैं जिसमें शद्रक, मेशक और अबेदनगो की आग की भट्टी में प्रार्थना और गायन शामिल है। मनश्शे की प्रार्थना।

राजाओं की पुस्तक हमें बताती है कि मनश्शे एक बहुत ही दुष्ट व्यक्ति था जिसने राष्ट्र को बर्बाद कर दिया। हालाँकि, इतिहास की पुस्तक, कहानी के बाकी हिस्सों को जोड़ती है और हमें बताती है कि मनश्शे ने अंततः पश्चाताप किया। खैर, अपोक्रीफा में हमें यह अद्भुत लंबी प्रार्थना मिलती है, यह बहुत ही काव्यात्मक प्रार्थना है जहाँ मनश्शे अपने सभी पापों का पश्चाताप करता है और अपना दिल वापस प्रभु की ओर मोड़ता है।

यिर्मयाह का पत्र, जो मूर्ति पूजा के विरुद्ध एक शपथ है, यिर्मयाह की पुस्तक के अंत में अटका हुआ है। भजन 151 जो भजन संहिता की पुस्तक का एक अतिरिक्त भाग है। इसके अलावा, हमें कुछ ज्ञानवर्धक पाठ भी मिले।

बेन सिरा की बुद्धि एक उल्लेखनीय पुस्तक है। मूल रूप से, इसे बेन सिरा नाम के एक व्यक्ति ने हिब्रू में लिखा था, और उसके पोते ने इसका ग्रीक में अनुवाद किया क्योंकि उसने कहा, मैं चाहता हूँ कि हर कोई मेरे दादा के शब्दों को पढ़ सके। और इसलिए हमारे पास यह अद्भुत पाठ है जिसमें ज्यादातर नीतिवचन दर्ज हैं, लेकिन वास्तव में, कुछ मायनों में, यह पुस्तक पुराने नियम में नीतिवचन की पुस्तक की तुलना में बहुत अधिक सुव्यवस्थित है।

यहाँ कुछ रचनाएँ अपनी अंतर्दृष्टि के लिए उल्लेखनीय हैं, अन्य बहुत अपमानजनक हैं, विशेष रूप से महिलाओं के बारे में उनके विचार, लेकिन इस अवधि के दौरान लोगों के कुछ दृष्टिकोणों की एक अद्भुत झलक है जो संभवतः लगभग 200 ईसा पूर्व या उसके आसपास लिखी गई थी। सुलैमान की बुद्धि एक और पाठ है, इस युग से कहावतों का एक और संग्रह भी है। मेरी राय में, बेन सिरा के स्तर तक तो नहीं, लेकिन फिर भी बहुत दिलचस्प पढ़ने योग्य है।

और फिर 2nd एज्रा की पुस्तक है या जिसे कभी-कभी 4th एज्रा के नाम से भी जाना जाता है जो एक सर्वनाशकारी पाठ है। ज्यादातर लोगों का मानना है कि यह 90 ई. के आसपास लिखा गया था जब रोमियों ने यरूशलम को नष्ट कर दिया था। ईसाइयों द्वारा इसके प्रसारण में स्पष्ट रूप से

सुधार किया गया था लेकिन ज़्यादातर लोगों का मानना है कि यह मूल रूप से एक यहूदी पाठ था।

और यह कहानी, यह किताब, हमें यरूशलेम के विनाश और उसके बाद के यहूदी दृष्टिकोणों पर बहुत रोशनी डालती है। मसीहा के आने के बारे में इसकी उम्मीदें बहुत भारी हैं जो राष्ट्र के विनाश के बाद भी उसे बहाल करने जा रहा था। फिर हमारे पास बारूक की यह किताब है जो मिश्रित शैलियों की है, जो कभी काव्यात्मक, कभी भविष्यवाणी, और कभी ज्ञान का पाठ है।

बारूक के नाम से लिखी गई विभिन्न रचनाओं की एक बहुत ही रोचक पुस्तक। अब, लगभग निश्चित रूप से बारूक ने इसे नहीं लिखा, लेकिन फिर भी यह पढ़ने में बहुत ही रोचक है। बारूक उस घटना का एक उदाहरण है जिसे हम स्पूडेपिग्राफा या स्पूडेपिग्राफी कहते हैं, जिसका मूल रूप से अर्थ है झूठे शिलालेख।

मुख्य रूप से द्वितीय मंदिर काल में रचित लेखन, हालांकि छद्मलेख संभवतः उससे भी पहले के हैं और उसके बाद भी काफी समय तक चलते हैं, लेकिन आमतौर पर ये ग्रंथ किसी लंबे समय से मृत संत के नाम पर लिखे गए थे। उदाहरण के लिए, 90 ई. में लिखी गई चौथी एज्रा की पुस्तक, एज्रा को दिए गए रहस्योद्घाटन का दावा करती है, वह व्यक्ति जो फारसी साम्राज्य के दिनों में यहूदिया या यहूदा का गवर्नर था। इसलिए, बारूक की पुस्तक में, फिर से, हमारे पास यह पाठ यिर्मयाह के लेखक के नाम पर लिखा हुआ है, भले ही यह लगभग निश्चित रूप से कई शताब्दियों बाद की बात है।

चर्च के कुछ क्षेत्रों में इन ग्रंथों को संरक्षित किया गया है, और उनमें से सभी अपोक्रीफा में नहीं हैं, उनमें से कुछ इथियोपिया में संरक्षित थे, उनमें से कुछ रूस के क्षेत्रों में संरक्षित थे, और अन्य क्षेत्रों में, उनमें से कुछ मृत सागर स्क्रॉल में दिखाई देते हैं, लेकिन कुछ लोग, कुछ ईसाई, इन पुस्तकों को आधिकारिक मानते हैं और उन्हें ऐसे पढ़ते हैं जैसे कि वे धर्मग्रंथ हों। सबसे महत्वपूर्ण छद्मलेखों में से कुछ में 1 हनोक शामिल है, और 1 हनोक हनोक के नाम पर लिखा गया एक पाठ है, और हम बाद में 1 हनोक के बारे में बात करने में काफी समय बिताने जा रहे हैं, क्योंकि यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण पाठ है और यह हमें स्वर्गदूतों के बारे में विचारों को विकसित करने के बारे में बहुत कुछ बताता है, और यह पुस्तक वास्तव में नए नियम में उद्धृत की गई है। नए नियम में जूड की पुस्तक में, वह इस बारे में बात करता है कि कैसे प्रभु अपने दस हज़ार पवित्र लोगों के साथ न्याय करने के लिए आता है।

यह 1 हनोक की पुस्तक से एक उद्धरण है। 1 हनोक संभवतः एक मिश्रित पाठ था जिसे शायद एक शताब्दी या उससे अधिक समय की अवधि में लिखा गया था, लेकिन निश्चित रूप से इसकी उत्पत्ति यीशु से पहले के समय में हुई थी। जुबलीस की पुस्तक एक ऐसी पुस्तक है जो डेड सी स्क्रॉल समुदाय के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी, और जुबलीस में दिया गया विवरण एक विवरण है, एक तरह का छद्म-मूसा पाठ है।

यह मूसा के नाम से लिखा गया है, और यह इतिहास को जुबली के 49-वर्ष की अवधियों की श्रृंखला में विभाजित करता है। फिर इन ग्रंथों के अलावा, जो आमतौर पर प्रतियों में और अक्सर

अनुवादों में बचे हुए हैं, हमारे पास पांडुलिपियाँ भी हैं जो खोजी गई हैं। ये ऐसे ग्रंथ हैं जो मुख्य रूप से यीशु के समय से पहले के हैं।

हमारे पास एलिफेंटाइन पपीरी के कुछ पाठ हैं। हम बाद में फारस के बारे में बात करते समय उनके बारे में बात करेंगे। ग्रीक युग से, हमारे पास कुछ पाठ हैं जिन्हें हम ज़ेनॉन पपीरी कहते हैं, जो वास्तव में एलिफेंटाइन पपीरी जितना महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन फिर भी सिकंदर के समय के बाद ग्रीक साम्राज्यों के प्रशासन में कुछ दिलचस्प जानकारी देता है।

और फिर, बेशक, डेड सी स्क्रॉल हैं, जो इन ग्रंथों में सबसे प्रसिद्ध हैं। सबसे पहले 1947 में खोजा गया, और फिर कई बाद की खोजों में जो 1960 तक चलीं। और वास्तव में, इन दिनों भी नए ग्रंथों की खोज की जा रही है।

लेकिन खोजों का मुख्य हिस्सा 47 और 60 के बीच हुआ था। ठीक है, उनमें बाइबिल की पुस्तकों और अन्य ग्रंथों की पांडुलिपियाँ हैं जो 200 ईसा पूर्व से लेकर लगभग 70 ईस्वी तक की हैं, संभवतः इनमें से सबसे नवीनतम ग्रंथ हैं। मृत सागर स्क्रॉल के बीच हमें जो अन्य ग्रंथ मिलते हैं, उनमें हमारे पास धार्मिक दस्तावेज हैं, जो एक समूह के उत्पाद हैं जिन्हें हम मृत सागर संप्रदाय कहते हैं।

और अक्सर, इन्हें एसेन के रूप में पहचाना जाता है, जिनके बारे में हम बाद में बात करेंगे, इससे पहले कि हम डेड सी स्क्रॉल के बारे में बात करें। और हाँ, ये सभी ग्रंथ हमारे कुछ व्याख्यानों में थोड़ी देर बाद चर्चा में आएंगे। उस समय, हम देख पाएंगे कि इन ग्रंथों ने संस्कृति, विकास, उन विचारों पर कैसे प्रकाश डाला है जो अंतर-नियम अवधि में यहूदियों के बीच प्रमुख थे, और इन विचारों ने नए नियम की दुनिया को कैसे आकार दिया।

यह टोनी टोमासिनो और यीशु से पहले यहूदी धर्म पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 2 है, यहूदी इतिहास के पुनर्निर्माण के स्रोत।